

ॐ काय जातं चन्द्रमधुलं तस्मात्कृतम्पुञ्जसंस्तुतिं तदभिरिगलोक
 पातालान्महतीवसमृद्धिं मृत्मानि नियपूना इत्यादि लोकपालमृद्धि
 नमयतु ॥ ॐ ॐ न्यायस्वाहा ॥ ॐ यमस्वाहा ॥ ॐ वरुणाय स्वाहा ॥ ॐ
 वायस्वाहा ॥ ॐ मरुतयस्वाहा ॥ ॐ नेत्राय स्वाहा ॥ ॐ वायुवे स्वाहा ॥
 ॐ आनाय स्वाहा ॥ ॐ ऊर्ध्वाय स्वाहा ॥ ॐ सूर्याय स्वाहा ॥ ॐ विष्वक्त्राय स्वाहा ॥
 ॐ चन्द्राय स्वाहा ॥ ॐ मृद्वय स्वाहा ॥ ॐ नागाय स्वाहा ॥
 ॐ असुराय स्वाहा ॥

स्वाहा ॥ ॐ यज्ञाय स्वाहा ॥ ॐ सर्वदिग्विदिग् लोकपालाय स्वाहा ॥ ॐ न्याय
 स्वाहा ॥ ॐ इति पूष्य न्यायः ॥ पञ्चापहानपूजा ॥ ॐ न्याय स्वाहा ॥ ॐ वज्र
 लाय स्वाहा ॥ ॐ वज्रमालाय स्वाहा ॥ ॐ वज्रगीतय स्वाहा ॥ ॐ वज्रनृत्यय स्वाहा ॥ ॐ वज्रपूष्य
 स्वाहा ॥ ॐ वज्रधूपय स्वाहा ॥ ॐ वज्रावलाकितय स्वाहा ॥ ॐ वज्रदमय स्वाहा ॥ ॐ वज्रवर्णय स्वाहा ॥ ॐ वज्र
 मय स्वाहा ॥ ॐ धर्मय स्वाहा ॥ ॐ न्याय स्वाहा ॥ ॐ न्याय स्वाहा ॥ ॐ न्याय स्वाहा ॥ ॐ न्याय स्वाहा ॥ ॐ न्याय स्वाहा ॥
 ॐ धर्मय स्वाहा ॥ ॐ न्याय स्वाहा ॥ ॐ न्याय स्वाहा ॥ ॐ न्याय स्वाहा ॥ ॐ न्याय स्वाहा ॥ ॐ न्याय स्वाहा ॥
 ॐ वज्रवीर्यय स्वाहा ॥ ॐ वज्रवीर्यय स्वाहा ॥ ॐ वज्रवीर्यय स्वाहा ॥ ॐ वज्रवीर्यय स्वाहा ॥ ॐ वज्रवीर्यय स्वाहा ॥
 ॐ वज्रवीर्यय स्वाहा ॥ ॐ वज्रवीर्यय स्वाहा ॥ ॐ वज्रवीर्यय स्वाहा ॥ ॐ वज्रवीर्यय स्वाहा ॥ ॐ वज्रवीर्यय स्वाहा ॥

कील यकु दग का छ विघ्न हं तानि माम्भ हं ॥
 वीना जीला कपाला महर्षि काः ॥ इति दिशु स्थिता वीना लोकपालान्नमा
 म्भ हं ॥ नमस्कृता धना जानं सर्व इष्ट निष्कृत्तनं ॥ १ ॥ लोक विजया दीना
 का छ ना जन्म मास्युहं ॥ मनुजार्थ ॥ विनाशं वृद्ध विम्वं दिवस कलधना
 ना भया विं इलखं मेणीयं चानूपं मित्र सिवन तनूं मंशु पाय च गभ ॥ प
 मास्थं दर्नूपं कलित नव पूखं वज्रि क्षंती मना दं विज्ञानं हान नूपं निह
 त र वरु यं पंचमूर्ति पधं म्पा ॥ बलि सकि स्नान मय नं सय कं ॥ ६० ॥

ॐ न्वा दिव जी सह द व सं धे वि मं च गृहं वलिं वि । श्रुं ॥ अग्निर्यमा
 नेत्रा सूरु पति श्रु जापां पति वायु धना धिप ॥ ६१ ॥ अनरु ना धिप
 ति च द वा ॥ दुर्ध्वं च चन्द्रा र्क पिता मह ॥ द वा स म स्का रु वि य च ना गभ
 ध ना ध ना गु म ग धे ॥ समता ॥ प्रति प्र ति त्व क नि व द य कु स्व क स्व का त्वे
 व दि ॥ स रु ता गृहं कु रु द्या स ग धे स मे न्या ॥ स पू ज दा या स ह रु स सं धे
 ॥ ॥ पू ष्यं बलिं धूप विलपनं च गृहं कु रुं कुं पि व कु च दं ॥ ६२ ॥ दं च कं मे स

रुलंरुषनुस्वाहा॥ ॐ ॥ **ममृगकशुलिबुलिमनुः॥** अं न मा च त्र
प्राय॥ न मं च सु व ज पान दाय॥ न मा म हा की टाय॥ महा द शु द्द
हे व वा य॥ मृ सि मृ ण ल प य शु पा म गृ ही त ह स्ता य मृ मृ त क गु लि र व र
श खा हि र ति मृ २ व न्ध २ ह न २ द ह २ प च २ ग र्ज २ वि स्फो ट य २ स र्व वि प्र
वि ना य का नां महा ग ध प ति जी वि त्तान का वा य रुं २ रुं २ स्वा हा॥ अं
मृ का ना मृ ख स र्व ध र्मा धं मा य नू तृ प त्र त्वा तू अं जाः रुं स्वा हा॥ पंचा

पचा न पू जा मृ शे ला **मृ रु ति मनु तर्प्य द॥ ॐ ॥** धन मा ल सा म्रा
दि पू जा॥ ध नं ति सि द्ध त य॥ उ या ता द ल च क ता नि च धू ता वि शू क ता रा
मृ वा द ग्ध नि ति त य॥ त्रि ला क म हि ता पी यू ष धा ना शू ता॥ वृ द्ध स न न
सा वि ला वि क ल र्वा सा नं द सं दी ह ना रा वा हा व वि चा न र्म वि न हि ता
वा ना हि का पा तु वः॥ १ ॥ निर् मा ना नि दि न ग म धु ल ग ता का या दि व
र्त न ना श णा ला ली ल ना रु तां मृ त स वा शृ क्ता कृ मृ शा प मा वि याः

॥ वृद्धकदंबकदहति याचकृष्ण हृदि निः सानंदाललिता ईश्वर वरु
वावा नाहिका चतसि ॥ २ ॥ प्रतिपाति देव पूजा ॥ ३ ॥ वरु महे ॥ वतन म
धुल वाया वसिष्ठ मंद कासं ॥ वरु वाया ही मूल मनुष्यं ॥ वाहा स्वां नं वा
या इथ ना वरु ॥ ३ ॥ अधिष्ठा न यास्यं सिद्ध कृत्त कथ कालि न कि नं ति न
थन कर्ज ल साधन ॥ हृदय म मनुष्यं ॥ अधन यास्यं ॥ हृदय म मनुष्य ॥ २१ ॥
थनं लिङ्ग म मय आदि का ॥ धूना वा ॥ थ कालि नं म धुल थिल क स्वा

न वाय क कितन ॥ हृदि स क नान ॥ गुण किल वरु जाय ॥ नम कृष्ण क
ज कि न्यः ॥ वृद्ध धर्म स्वरा न क ॥ धूना गुण पूजा थ वरु म धुल कृष्ण
विश्व पवर्ज यित्वा वरु न चि क्त समाहितः ॥ म धुल विसर्जन ॥ ला व व
लि विसर्जन या य वा क कल कृष्ण ॥ पि खाल वरु म ॥ ॥ थुति गुण म धुल
य वलि विधिः ॥ ॥ ॥ थनं लिङ्ग म मय आदि समाधिः ॥ धूना लि ॥ सगं म न मा
म की पूजा ॥ ज्ञा पां ला व ना क य ॥ स्वा व वरु म सर्व धर्मा थं ॥ स्वा व वरु म

धूपनयधने॥ कृष्णधने॥ वंजोर्जिखं॥ ओं हः हाः कीः ज्ञः खं स्वा
हा॥ पादयागुमयथ्यतस्यवाक्का॥ ओं मामकी॥ ज्मृत्तज्मृत्तसंखवै॥
कहिज्मृत्तप्रवशयकीः हं स्वाहा॥ ॥ ७३ ॥ ॐ ॥ ॥ ॥

II-281

धर्मरत्न वज्राचार्य सुरत श्री महाविहार

हं॥ भूतानां हानवज्रस्वहावात्मकी हं॥ थनेति धूप॥ हगवन्नमूकसुहृज
विद्यानाऊनमास्तुत॥ ॐ कामिपूजितं चाथमधुलकुनूधत्सके॥
मिष्याशमनूकंपार्थयूष्माकंपूजनाय च॥ तन्महत्तुं हगवन्प्र
सादं कर्तुमर्हसि॥ समन्वाहन्नुमां वृद्धाः ऊपचर्कक्रियार्थदा॥ हेल
स्थवाधिसत्वाश्चयाचान्यामनुदेवताः॥ देवतालीकपालाश्च
ताः सन्वाधिसाभिनाः॥ साभनाहिचताः सत्वाय कचिद्वज्रचक्रा॥

४ निमनुना

जमूकाहं महावजी॥ जमूकादयमधुली॥ कविष्यामि गुरुर्देयथा
भमपूषवाचतः॥ जमूकपा मूपादाय सच्छिष्यचतनाम॥ मधुमहि
ता सर्वे सानिघ्नं कर्तुमर्हथः॥ वज्रधूपनिर्जतयामिवज्रधूपप्रतिकु
त्वाहाः॥ जयमसहलं ऊनं सहलं कीवितंचम॥ समयं
सर्ववृद्धानां हविताहन्मभयः॥ जदेवर्कतविष्यामि वाक्षे चिकु
कचंसा॥ तथागतकलात्पुत्रिर्ममानस्यान्नसंभयः॥ जगमदिवसां नय

य

यत्नमयनूलयः॥ सन्निपातायैव यत्नमयनूलयः॥ स्नाना॥
 यत्नगलेसकलसत्त्वहृदिस्थितस्य सर्वात्मकस्य वनधर्मकृत्ताधिप
 स्या॥ निःशयदायवाहितस्य महासूखस्य तन्मज्जले एव तु प्रनमाति
 यकेः॥ वृंम्रांजींखंरूंजींआःशांकिंखंरूं॥ **कंकन**॥ प्रतिविम्बसमा
 धर्मा मृकाशुद्धा मना विला॥ अगाफानहिताप्याश्च हृदकर्मसमूह
 वः॥ ॥ **अनामगुलाधिलका**॥ अंबकादकंरूंअंबकुरुमखिसूतधस

वतथागतसूवर्धुध्वीयस्वाहा॥ ॥ **वतसिद्धि**॥ ॐ दक्षपचमंगंधवि
 विगुंघ्राधतर्प्यधं॥ ददामिपचमंरूंग्याप्रतिगृह्यथामूखं॥ सिन्धुनं
 सहजंभानंविचिगुंघ्रतुंअहितं॥ निर्यातयाम्यहंप्रीत्यासर्वसिद्धिपु
 यकमअंबकृतिलकुरुयधस्वाहा॥ **यक्रमका**॥ ॥ अंबकुरुवक्रुतं
 काजपूजामयसमूहसूवधंयक्षपवीतवाधुक्कृदृकवचवक्रु
 वाससंजींस्वाहा॥ ॐ॥ **स्नानकाय**॥ स्वरुवःकुरुतांबुद्धःस्व॥

स्तिदवाः सठाककाः स्वस्ति सर्वोतिहृत्तानि सर्वकालेदि संतुवः ॥ वृ
द्वपुष्पानुलवनदवनानां मरुतच ॥ यायाः र्थसमहिपतः सर्वथाय
समृद्धीनां ॥ स्वस्ति वादिपदहा कुस्वस्ति वास्तुचतुष्यद ॥ स्वस्ति वाविज
नामार्हस्ति प्रयागतयुच ॥ स्वस्ति वाडो स्वस्ति दिवा स्वस्ति मध्वादि
नस्थितः ॥ सर्वतस्वस्ति वा हा कुमा चेषां पापमागमत् ॥ सर्वसत्त्वास्त
वर्षास्तः सर्वशुभाश्चैकवलाः ॥ सर्ववेसुरिविनः सन्तु सर्वं नुनिनां

मयाः ॥ सर्वतुडाशिपः शंनुमाकश्चित्पापमागमत् ॥ पानीहृत्तानि
समागतानि स्थितानि रुमांसथवान्तनिज ॥ कुर्वन्नु मेडी सततं प्रजा
सुदिवचना शोचचर्कुधर्म ॥ ओं वरुपुष्पं पति कृत्वाहा ॥ ॥ नैवशसम
य ॥ नैवशं सर्वसंयुक्तवाक् हाक्तसमन्वितं ॥ वर्षगन्धनसापतप
तिगृह्यं यथासुखं ॥ ओं वरु नैवयं स्वाहा ॥ ॥ मयधया ॥ ओं नमाह
गवतदीयवीयभवाय हं २ हृद् ॥ ओं नमः महाकल्पाग्नि सन्निहाय १

